सुर साधना

समाज में और प्रकृति के साथ सुर-ताल की साधना
ज्ञान मार्ग

अनियमित पत्रक **वाराणसी ज्ञान पंचायत की पहल** सीमित वितरण के लिए

साईं वही ज्ञानी है, जो जाणे पर पीड़

वर्ष 1, अंक 2, जून 2022
सहयोग राशि रु. 10/-

'लोक' और 'लोकनीति'

लोक' यानि वह दुनिया जो हमारे आस-पास है. धरती, आकाश, बादल, मौसम, नदी, पहाड़, पेड़-पौधे, प्राणी-जगत, मनुष्य-समाज सभी इसमें हैं.

मनुष्य-समाज की खुशहाली का आधार इस पूरे लोक की खुशहाली में है.

'लोकनीति' यानि जीने के ऐसे प्रकार जिनके माध्यम से इस लोक को सतत् सभी की खुशहाली की ओर ले जाया जा सके. यानि सहजीवन की ऐसी व्यवस्थाओं का विचार बनाना जिनमें दुःख, अन्याय, ज्यादती करने वाले कदमों को रोकने में समाज समर्थ बने.

सम्पादकीय :
वाराणसी नगर निगम के चुनाव

वाराणसी नवीनता का आग्रह रखती रही है, युगों युगों से 'भरम छोड़ो, नया सोचो' का उद्घोष करती रही है. वाराणसी ज्ञान पंचायत की और से एक **लोकनीति-संवाद** की पहल इसी परंपरा में है. लोगों की पहल, उनके ज्ञान, उनकी सकारात्मक ऊर्जा और सद्प्रवृत्तियों की भागीदारी को निरंतर बढ़ाने की नीति ही लोकनीति है. लोकनीति को पार्लियामेंट्री डेमोक्रेसी मानना तो भरम ही कहा जायेगा. संत कबीर कहते हैं---'भरम जाल को बार दे मनवा...'

अगले माह नवम्बर में वाराणसी नगर निगम के चुनाव होने जा रहे हैं. नगर में सौ वार्ड हैं. मान लिया जाय कि हर वार्ड में कम से कम 3 या 4 उम्मीदवार खड़े होंगे. इसका मतलब है कि कम से कम तीन-चार सौ व्यक्ति इस चिर जीवंत नगरी को संवारे रखने और निखारने की योजनाओं के प्रति गंभीरता से सोच रहे होंगे. वाराणसी के नागरिक इनसे क्या अपेक्षा रखते हैं? नागरिकों और स्थानीय निकायों के बीच संवेदना और अपनेपन के साथ सम्मानपूर्ण संवाद हो, इससे ही लोकनीति और इस नगर की परंपरायें पुष्ट होंगी.

सुर साधना के ये अंक उम्मीदवारों और नागरिकों के बीच सार्थक संवाद के लिए मदद कर सकें इसकी उम्मीद करते हैं.

वाराणसी की लोकनीति परम्परायें

वाराणसी यह लोकनीति और लोकधर्म की जीवंत परम्पराओं के लिए जाना जाता है. यहाँ के नागरिकों की लोकनीति के प्रति आस्था बेवजह नहीं रही. एक घटना है. अंग्रेजों के राज के समय की बात है, वर्ष 1810 की. अंग्रेजों ने नगर निवासियों पर एक नया कर, भवन कर लगाया. नगर निवासियों को यह नागवार गुज़रा. डॉ. मोतीचंद के लिखे 'काशी का इतिहास' में लिखा है कि नागरिकों ने तर्क दिया कि मुगलों के राज में भी 'गृह कर' का नाम नहीं सुना था. इस तरह अगर अंग्रेजों की मनमानी चलती रही तो वे भविष्य में बच्चों पर भी कर वसूलने लगेंगे. अँगरेज़ नहीं माने तब बनारस के लोगों ने सामूहिक तौर से धरना देने का निश्चय किया. बड़ी तैयारियों के साथ लोग घरों से निकलकर गंगाजी के रेतीले हिस्सों पर जाड़ा,गर्मी, बरसात की परवाह किये बिना आ कर जम गये. अंग्रेजों की रपटों के अनुसार यह संख्या लगभग 3 लाख थी. अंतत: अंग्रेजों ने हार कर गृह कर वापस लिया.

वाराणसी की कुछ मोटी जानकारियाँ

- नगर की आबादी लगभग 16 लाख है और यहाँ 100 वार्ड हैं. एक वार्ड में लगभग 15-20 हज़ार वोट हैं.
- नगर में उत्पादन के विविध ज्ञानधारी कारीगर, तरह-तरह की सेवाएँ प्रदान करने वाले, मरम्मत और रखरखाव के जानकार, ठेले-पटरी-गुमटी के दुकानदार और छोटी पूँजी से उद्दयम करने वाले सभी लोगों की मिलकर आबादी कुल आबादी का लगभग 85 फीसदी है. इस नगर का स्वभाव और ज्ञान भण्डार इनके चलते ही निर्मित और नवीन होता रहता है.
- वाराणसी जिले में लगभग 900 गाँव हैं, जो नगर निवासियों के लिए भोजन और अन्य उत्पादन मुहैय्या करते हैं. जिले की आबादी लगभग 45 लाख है.
- गाँवों से लगभग हजारों की संख्या में प्रतिदिन 20-25 किलोमीटर साइकिल चलाकर मजदूर आते हैं जो नगर को विविध सेवाएं प्रदान करते हैं.
- देश के कोने-कोने से सालभर में कुल करोड़ों की संख्या में तीर्थ यात्री (जो पर्यटक नहीं हैं) आते हैं और निरंतर इस भूमि के लोकधर्म में व्याप्त त्याग, उदारता, सहिष्णुता, भाईचारा के मूल्यों की व्यापक पुनर्स्थापना कर जाते हैं.

नगर निगम की जिम्मेदारियां क्या हों इस पर विचार के लिए ही उपरोक्त बिंदु हैं.
इसके अलावा भी कई बिंदु हैं, जिन्हें हम अगले अंको में देते रहेंगे.
लेकिन नगर निगम और नगर निवासियों की जिम्मेदारियां और प्राथमिकतायें कैसे तय हों इसके दर्शन की खोज हमें है. लोकनीति संवाद इसी दिशा में एक प्रयास है.

लोकनीति संवाद -1

नगर के अस्सी घाट पर रविवार 11 अक्तूबर 2022 को लोकनीति-संवाद का आयोजन हुआ. **स्वराज अभियान के रामजनम** ने विषय का परिचय कराते हुए लोकनीति-संवाद की ज़रूरत को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि हमारे समाज में ज्ञान की उन धाराओं को, जो लोकहित में हैं, जीवंत हैं, और नैतिक शक्तियों को बल प्रदान करती हैं, उन्हें पहचानना और समाज के बीच लाना आवश्यक है। जल्दी ही वाराणसी नगर निगम के चुनाव होने जा रहे हैं, ऐसे में हमारे सभासद लोकहित में किस तरह की नीतियां बनायें और अमल करें, इस पर सार्वजनिक संवाद होना चाहिए। **किसान, कारीगर, मज़दूर, पटरी, ठेलेवाले यानि लोकविद्या-समाज के ज्ञानी, पढ़े-लिखों की बराबरी से जब इस संवाद में शामिल होंगे तभी 'कारगर नैतिक लोकनीति' को आकार मिल सकेगा.**

लोकविद्या जन आन्दोलन की संयोजक चित्रा सहस्रबुद्धे ने कहा कि लोकनीति के मायने प्रकृति के साथ तालमेल में जीवन को गढ़ने के प्रकारों में हैं. राजनीति और लोकनीति में विरोध है. लोकनीति में सम्पूर्ण लोक को खुशहाल बनाने की नीतियां हैं और राजनीति मात्र कुछ लोगों के स्वार्थ को पूरा करती रही है. सामान्य लोगों के पास ज्ञान है और इनके ही जीवन में समकालीन नैतिक मूल्य भी पलते हैं. इन्हीं के बल पर लोकनीति को गढ़ा जा सकता है. अगले ही महीने वाराणसी नगर निगम के चुनाव होने हैं. चुनाव लड़ने वालों से यह संवाद किया जाना चाहिए कि वे लोकनीति को मज़बूत करेंगे या राजनीति को ? **तर्क संगत तो यही है कि वाराणसी के स्थानीय निकायों की व्यवस्थाओं में वाराणसी-लोक की खुशहाली को प्रधानता मिलनी चाहिए.** वाराणसी के सभी लोगों और समाजों से हमारी अपील है कि वे इस लोकनीति-संवाद में शामिल होकर लोक की खुशहाली के रास्ते बनाने में योगदान करें.

भारतीय किसान यूनियन के वाराणसी नगर अध्यक्ष कृष्ण कुमार ने कहा कि हाल ही में हुए किसान आन्दोलन ने 'न्याय, त्याग और भाईचारा' जैसे नैतिक मूल्यों को स्थापित कर लोकनीति की बुनियाद बना दी है. इन मूल्यों पर आधारित लोकनीति ही राजनीति को मर्यादित कर नैतिक पथ पर ला सकती है.

अध्यक्षता कर रही कारीगर नजरिया की प्रेमलताजी ने कहा कि लोकविद्या ही लोकनीति का

निर्माण करती है और लोकनीति पुनः लोकविद्या को नवीन कर मज़बूत बनाती है. इस बात को अगर समझें तो सामान्य किसान-कारीगर समाजों में बसी नैतिक शक्ति का प्रवाह पुनर्जीवित हो उठेगा. उन्होंने कहा कि लोकनीति-संवाद की ये कड़ियाँ आगे जारी रहेंगी और अगला संवाद राजघाट पर गुरुवार को होगा. संवाद में लक्ष्मण प्रसाद, कमलेश, सरविन्द पटेल और सामू भगत ने भी अपनी बात रखी.

पिछले सौ वर्षों में भारत में राज्य की अवधारणा को विभिन्न जन आन्दोलनों से आये मूल्यों ने प्रभावित किया है. इन्हें नीचे दिए बिन्दुओं में लिखा है. लोकनीति पर विचार करते समय शायद इससे मदद मिले.

- **यूरोपीय प्रबोधन से आये — समता, स्वतंत्रता और बंधुत्व**
- **गांधीजी के नेतृत्व में आज़ादी के आन्दोलन से आये — सत्य, अहिंसा और स्वदेशी**
- **हाल ही के किसान आन्दोलन से आये — न्याय, त्याग और भाईचारा**
- **नफ़रत छोड़ो-भारत जोड़ो अभियान के दौरान — तार्किकता, क्षेत्रीयता और सामाजिक-न्याय**

लोकनीति संवाद -2

वाराणसी नगर निगम के चुनाव के परिप्रेक्ष्य में वाराणसी ज्ञान पंचायत की ओर से चलाये जा रहे लोकनीति-संवाद की दूसरी कड़ी गुरुवार के दिन शाम 4.00 बजे राजघाट पर सम्पन्न हुई. वक्ताओं में **वार्ड 63 जलालीपुरा** (कज़्जाक पुरा रेल लाइन से वरुणा नदी) **से सभासद उम्मीदवार फज़लुर्रहमान अंसारी, वाराणसी आटोचालक यूनियन के संयोजक ज़ुबेर खां, राजघाट के नाविक दुर्गा प्रसाद साहनी, भाकियू वाराणसी नगर अध्यक्ष कृष्ण कुमार गुप्ता आमंत्रित थे.** स्वागत और संचालन गोरखनाथ जी ने किया. लोकविद्या सत्संग के साथ संवाद शुरू हुआ.

नगर निगम की जिम्मेदारियों और सभासद के कर्तव्य पर विस्तार से अपनी बात रखते हुये **अंसारी महोदय** ने कहा कि वार्ड के निवासियों के प्रति उस वार्ड के सभासद का नैतिक दायित्व है और नगर निगम द्वारा वार्ड के लिए किये जा रहे काम निवासियों का अहित न करें इसके प्रति उसे सचेत रहना चाहिए. इसके लिए वार्ड के निवासियों के बीच संवाद और सहजीवन के मूल्यों की स्थापना पहला कार्य होना चाहिए, जिसके चलते पैसे के बल पर बढ़ती अनैतिक शक्ति, भ्रष्टाचार, व अव्यवस्था को रोका जा सके. उन्होंने कहा कि इस दिशा में वे अपने कार्य तय करेंगे और इस नगर की विविधता के बीच सहजीवन की परम्परा को मज़बूत करने की ओर कदम बढ़ायेंगे. उनका सुझाव था कि हर वार्ड में एक वार्ड पंचायत होनी चाहिए.

खां साहब का कहना था कि नगर निगम जब आटो स्टैंड का ठेका देता है तब आटो चालकों से संवाद कर उनकी परेशानियों और सुझावों को लेना चाहिए. हर वार्ड में परिवहन की व्यवस्था के लिये वहां के सभासद की ज़िम्मेदारी तय होनी चाहिए. राजघाट के **नाविक श्रीमान दुर्गा प्रसाद** ने नाविकों की समस्याओं को बहुत ही स्पष्टता से सबके सामने रखा. नगर निगम की नीतियां प्रदूषण और सुंदरीकरण के नाम पर लोगों के मुंह का निवाला छीनने और उनके घरों को उजाड़ने की कैसे हो सकती हैं? इस नगर की परम्परा तो सबको अन्न खिलाने और शामिल कर लेने की रही है. हम नाविकों के साथ निगम का यह व्यवहार इस नगर की परम्परा का निर्वाह करने में सर्वथा असफल है.

कृष्ण कुमार जी ने कहा कि गंगा जी और गंगा जी के घाट कैसे स्वच्छ और निर्मल रहें इसके लिये यहां के किसान, कारीगर और नाविकों से ही सही राय मिलेगी

जिन्होंने सदियों से ऐसा कर दिखाया है, ना कि कारपोरेट कम्पनियों से.

चित्रा जी ने कहा कि नगर निगम और सभासद नागरिकों की सेवा के लिये हैं. नगर के राजा तो यहां के नागरिक ही हैं. इस रिश्ते को वास्तविक बनाने की दिशा खोजना ही लोकनीति-संवाद का लक्ष्य है.

संवाद के दौरान सभी वक्ताओं ने कहा कि चुनाव के बाद सभी प्रतिनिधि नागरिकों से मुंह फेर लेते हैं. ऐसी नशे में चूर राजनीति का इलाज भी क्या है? लोकनीति की भूमिका उस महावत की है जो पगलाये हाथी को काबू करता है.

अनगढ़ और मनगढ़ : विचित्र पहेली

अक्तूबर की एक सुबह मनगढ़ गमछा लिए वाराणसी के अस्सी घाट पर आये. सप्तमी नहान का पर्व था. गंगा जी में आई बाढ़ में घाट के हिस्से डूबे हुए थे और सप्तमी नहान का पर्व होने से शेष जगह भी विविध लोकसमूहों से पटी पड़ी थी। मंत्रमुग्ध मनगढ़ निहार रहे थे. रंगबिरंगे वस्त्रों में लोकसमूहों का रेला आता जा रहा था, भावपूर्ण हो डुबकी लेकर गंगाजी के प्रति आस्था प्रकट कर रहा था. गंगा जी की लहरें घाट की सीढ़ियों पर चली आ रही थीं जैसे अपने बच्चों को दुलारने के लिए मचल रही हों.

इस माहौल में एक कोने से 'भरम झाड़ी को बार दे..' पद गाने के स्वर उठ रहे थे. उत्सुकता में मनगढ़ के कदम उसी ओर बढ़ गए. सोचा कि ज़रूर लोगों में फैले अज्ञान और अंधविश्वास पर कुछ बात हो रही होगी. पहुंचे तो राजनीति के बारे में फैले अंधविश्वास की बात हो रही थी! ये क्या बात है? मनगढ़ के सामने पहेली बन गई कि कहाँ ज्यादा पाखंड है-- **लोकधर्म में या राजनीति में ?**

इसका जवाब तो अनगढ़ ही दे पाएंगे ये सोच कर मनगढ़ के कदम अनगढ़ के ठीये की ओर मुड़ गए.

--अगले अंक में

लोकनीति में उत्पादन की तकनीकी और प्रक्रियाओं की परम्परायें

भारत के एक वैज्ञानिक स्वर्गीय सी.वी. सेषाद्री ने, जो कानपुर आई.आई.टी. में पढ़ाते थे, भारत के कारीगरों द्वारा इस्तेमाल की जा रही तकनीकियों का गहराई से अध्ययन किया. उनके अनुसार ये कारीगर ताप, दबाव,और मात्रा के बहुत कम (ऊर्जा) अंतरों पर उत्पादन करते हैं. लगभग सभी किसान, कारीगर और आदिवासी जातियों में इस आग्रह को एक सिद्धांत का दर्जा मिलता रहा, वह इसलिए कि प्रकृति में सभी छोटे-बड़े परिवर्तन और क्रियायें कम ऊर्जा-अंतरों पर होती हैं.

प्रो. सेषाद्री के अनुसार साइंस आधारित तकनीकी बहुत अधिक ऊर्जा-अंतरों पर काम करती है और इसलिए वे अधिक खर्चीली, संसाधनों का अधिक दोहन करने वाली, बड़ी संख्या में रोज़गार छीननेवाली और बहुत ज्यादा प्रदूषण और कचरा पैदा करने वाली होती हैं.

वाराणसी ज्ञान पंचायत के लिए लोकविद्या जन आन्दोलन, भारतीय किसान यूनियन, स्वराज अभियान, बुनकर साझा मंच, माँ गंगाजी निषादराज सेवा समिति द्वारा संयुक्तरूप से संयोजित.

[संपर्क : चित्रा सहस्रबुद्धे (9838944822), लक्ष्मण प्रसाद (9026219913), रामजनम (8765619982), फ़ज़लुर्रहमान अंसारी (7905245553), हरिश्चंद्र बिन्द (9555744251)**]** **पता :** विद्या आश्रम, सा 10/82 अशोक मार्ग, सारनाथ, वाराणसी-221007

वाराणसी ज्ञान पंचायत

वाराणसी ज्ञान पंचायत यह वाराणसी के लोगों, स्त्री-पुरुषों का ज्ञान मंच है. यहाँ ज्ञान पर जन सुनवाई होती है. इस पंचायत में पढ़े-लिखे और अनपढ़, प्रोफ़ेसर और सामान्य स्त्री, कृषि वैज्ञानिक और किसान, टेक्सटाइल इंजिनीयर और बुनकर, जल वैज्ञानिक और मल्लाह आदि में ऊँच-नीच नहीं की जाती. सभी के ज्ञान को बराबरी का दर्जा है.